ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 209-211

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

भारतीय सशस्त्र बलों में नारी शक्ति की भूमिका : एक मूल्यांकन

1. डॉ0 आरती यादव
2. अभिषेक पाल

1. सहायक आचार्य, 2. शोध अध्येता– रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर (उ0प्र0) भारत

Received-12.02.2023, Revised-17.02.2023, Accepted-21.02.2023 E-mail: abhi2jznpal@gmail.com

सारांशः ***भारत की सेना ही भारत का गौरव है, योंकि इसके कारण हमारा देश हर दिन सुरक्षित हैं क्योंकि हमारे देश के सैनिक अपनी जान की परवाह किए बगैर देश की रक्षा के लिए तत्पर रहते है, भारत का सशस्त्र बल तीन शाखाओं में विभाजित है– जल, थल और वायु तीनों सेनाएं भारत की रक्षा में महत्वपूर्ण भुमिका निभाती है संपूर्ण वैश्विक इतिहास पर गौर करें,, तो यह पता चलता है, की समाज में महिलाओं की भूमिका राष्ट्र की स्थिरता, प्रगति एवं दीर्घकालिक विकास सुनिश्चित करने में अहम भूमिका अदा की है, वर्तमान समय में ऐसा कोई भी क्षेत्र नही है जहां महिलाओं ने अपनी मौजूदगी न दर्ज करायी हो, पुरुष प्रधान माने जाने वाले सैन्य क्षेत्र में भी महिलाओं की भूमिका सराहनीय रही हैं। भारत में नारी को शक्ति का रूप माना गया है, ये नारी शक्ति देश के बाहर और अंदर मौजूद खतरों से देश की रक्षा करने के साथ ही मुहतोड़ जबाव दे रही है, 1992 से महिलाएं सेना की तीनों शाखाओं में शार्ट सर्विस कमीशन के जरिए अपनी सेवाएं प्रदान करती रही है, लंबें समय तक भारतीय सेनाओं में महिलाओं की भूमिका चिकित्सीय पेशे डॉक्टर, नर्स तक ही सीमित थी, फिलहाल स्थायी कमीशन मिल जाने के बाद महिलाएं आर्मी एयर डिफेंस, सिग्नल्स, इंजीनियर्स, इलेक्ट्रॉनिक, आर्मी सर्विस कोर व इंटलिजेंस कोर जैसे विभिन्न पदों पर लम्बे समय तक सेना में अपनी सेवाएं दे पाएंगी, भारत की तीनों सेनाओं में फिलहाल महिलाओं की कुल प्रतिशतता 3 प्रतिशत है। सेना के कई विभागों में महिलाएं अपनी अग्रणी भूमिका निभा रही हैं।***

कुंजीभूत शब्द– भारतीय सेना, वायु सेना, नौ सेना , वैश्विक इतिहास, प्रगति, दीर्घकालिक विकास, अहम भूमिका ।

भारतीय सेना जो तीनों रक्षा बलों में सबसे बड़ी हैं, लेकिन यह बात भी सच है कि अभी उस अनुपात में यहां पर महिलाओं की संख्या नहीं है, जितनी होनी चाहिए, लेकिन स्थाई कमीशन ने बहुत सी तस्वीरें बदल कर रख दी है और बहुत कुछ बदलने की उम्मीद है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक वर्ष 2019 से 2020 में महिलाओं की संख्या भारत की तीनों सेनाओं में बड़ी है। वर्ष 2020 में भारतीय सेना में महिलाओं को स्थायी कमीशन दिए जाने के सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद अब तक देश की लगभग 500 बेटियों को सेना में बतौर अधिकारी स्थायी कमीशन मिल चुका है, जिसकी जानकारी रक्षा मंत्रालय ने संसद में दी है भारतीय सेना के वो विभाग जिसमे महिलाओं को परमानेंट कमीशन मिला है, वह है आर्मी एयर डिफेंस, सिगनल्स, इंजीनियरिंग,आर्मी एविएशन, इलेक्ट्रॉनिक्स, मैकेनिकल इंजीनियरिंग, आर्मी सर्विस कोर व इंटेलिजेंस कोर इन विभागों के अलावा अन्य कई और विभाग में महिला अधिकारी पुरुष के समान है। तब तक अपने पद पर कार्यरत रहेंगी, जबतक कि वो सेवानिवृत्त नहीं हो जाती है।[1]

शॉर्ट सर्विस कमीशन के जरिए महिलाएं 10 से 14 वर्ष तक ही सेना में सेवाएं दे पा रही थी, लेकिन स्थायी कमीशन हो जाने के बाद भी लंबें समय तक अपनी सेवाएं जारी रख पाएंगी। इसके साथ ही अपने रैंक के मुताबिक वह सेवानिवृत्त होगी और उसके बाद उन्हें पेंशन और भत्ते भी मिलेंगे वर्ष 1992 में शार्ट सर्विस कमीशन के लिए महिलाओं का पहला मैच भर्ती हुआ था। तब यह 5 वर्ष के लिए हुआ करता था। इसके बाद इस सर्विस की अवधि को 10 वर्ष के लिए बढ़ा दिया गया और वर्ष 2006 में सर्विस को 14 वर्ष कर दिया गया था और पुरुष अधिकारी शार्ट सर्विस कमीशन के तहत 10 वर्ष पूरे हो जाने पर अपनी योग्यता के मुताबिक स्थायी कमीशन के लिए आवेदन कर सकते थे, लेकिन महिलाएं ऐसा नहीं कर सकती थी पर अब ऐसा नहीं है, इस विकल्प के साथ ही ना सिर्फ भारतीय सेना का हिस्सा बने की चाह रखने वाली महिलाओं को, बल्कि सेना में मौजूद महिलाओं के लिए भी एक नया रास्ता खुल गया है, जिसमें समानता भी है और सम्मान भी।[2]

स्थाई कमीशन के फैसले के बात कई बदलाव देखने को मिले हैं, जैसे अब सेना में महिला अधिकारियों को प्रमोशन मिल पा रहा है। शॉर्ट सर्विस कमीशन के तहत महिलाएं को लेटिनेंट कर्नल से आगे नहीं जा सकती थी, लेकिन अब महिलाओं को एडवांस लर्निंग के विभागीय कोर्सेज में भी भेजा जाएगा। अगर प्रदर्शन अच्छा होता है, तो प्रमोशन में महिलाओं को इसका लाभ भी मिलता है महिलाएं स्थाई कमीशन के लिए चुने जाने पर कर्नल, ब्रिगेडियर और जनरल भी बन सकती है और जो विज्ञापन आएंगे उसमें साफ तौर पर लिखा रहेगा कि आपको योग्यता के आधार पर स्थाई कमीशन मिलेगा, पहले कि विज्ञापनों में केवल 14 वर्ष की शार्ट सर्विस कमीशन का जिक्र होता था। इस फैसले के बाद महिलाओं के पास सेवा निवृत्त होने की तक उम्र तक नौकरी करने का मौका है। भारतीय सेना में अभी महिलाओं की युद्ध मैदान से दूर रखा गया है, लेकिन जितनी मेहनत और लगन के साथ महिलाएं सेना में अपनी भूमिका निभा रही है, उम्मीद है कि आने वाले समय में जल्द ही किसी महिला को ब्रिगेडियर और और जनरल भूमिका में देखने को मिल सकता है।[3]

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

विश्व की 5 सशक्त वायुसेना में से एक भारतीय वायुसेना ने महिलाओं को उड़ने के लिए पंख भी दिया और खुला आसमान भी वर्ष 2022 में लिया गया। रक्षा मंत्रालय का बड़ा फैसला महिलाओं की उज्जवल भविष्य की तरफ बढ़ रहा है। सरकार ने कहा कि वायुसेना में महिलाओं को प्रयोग के तौर पर नहीं बल्कि फाइटर्स टीम में शामिल किया जाएगा वर्ष 2015 में पहली बार महिलाओं को फाइटर्स टीम में शामिल किया गया था, सेना में वर्तमान समय में लगभग 16 महिला फाइटर पायलट है वायुसेना देश का पहला ऐसा बल था जहां महिलाओं को युद्ध के मैदान में उतरने की अनुमति प्राप्त हुई वर्ष 2016 में तीन महिलाएं अवनी चतुर्वेदी, भावना कांत और मोहना सिंह फाइटर पायलट बनी थी राफेल लड़ाकू विमान उड़ाने वाली एकमात्र महिला पायलट लेटिनेंट शिवांगी सिंह भी शामिल है। वायु सेना में अब महिलाएं मिग 21, मिग 29, सुखोई फाइटर जेट तक उड़ा रही है। वह दिन भारतवासियों के लिए गर्व का दिन था जिस दिन भारत की तीन बेटियां महिला फाइटर पायलट के रूप में सामने खड़ी थी। आज वायु सेना में कार्यरत महिलाएं दुश्मनों से सीमा पर लड़ने के लिए तैयार है।[4]

कारगिल संघर्ष में भी महिलाओं ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, जिसमें लाइट लेटिनेंट गुंजन सक्सेना और विद्या राजन जिन्होंने करगिल संघर्ष में कमाल कर दिया था। पहली बार जेट हेलीकॉप्टर पर बैठकर वह पाकिस्तानी सैनिकों के बुलेट और मिसाइलों का मुकाबला कर रही थी बहुत से देशों में युद्ध ऑपरेशन में महिलाओं की भागीदारी का प्रावधान है, लेकिन ज्यादातर उन्हें इससे दूर रखा जाता है। महिला फाइटर पायलट भी अमेरिका, यूके, रूस, इजरायल, तुर्की और पाकिस्तान जैसे देशों में है। मलेशिया, श्रीलंका और बांग्लादेश जैसे देश वारशिप में महिलाओं को भेजते हैं और अमेरिका में तो न्यूक्लियर मिसाइल सबमरीन पर भी महिलाओं की नियुक्ति होती है। भारतीय वायु सेना विश्व की चौथी सबसे बड़ी सेना में से एक है गुलाम भारत में वायु सेना ने द्वितीय विश्व युद्ध में हिस्सा लिया था। भारत के आजाद होने के पश्चात भारतीय वायु सेना ने 5 युद्धों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है 8 अक्टूबर 1932 में भारत की वायु सेना अस्तित्व में आयी आजादी तक वायुसेना ब्रिटिश के अधीन थी वायुसेना का आदर्श वाक्य है नभ स्पर्श दीप्तम् है, जिसका अर्थ आपका रूप आकाश तक दमक रहा है। आकाश तक अपनी पहुंच बनाने और आकाश में खुद की चमक से दुनिया को परिचित कराने में महिलाओं को एक लंबा समय लग गया।[5]

भारतीय वायु सेना में महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार दिया जाता है बल्कि पुरुष साथियों द्वारा महिलाओं का हर संभव मदद भी किया जाता है पहले स्थाई कमीशन महिलाओं के लिए नहीं था लेकिन अब महिलाओं को स्थाई कमीशन में भी मिलने लगा है जिससे जॉब सिक्योरिटी का भरोसा कायम हुआ है परमानेंट कमिशन होने से महिलाओं के लिए बेहतर स्थिति हो रही है उन्हें अब दूसरी करियर ऑप्शंस के बारे में नहीं सोचना है महिलाओं को बराबरी का हक दिया जाता है और बात चाहे प्रोन्नति की हो या पोस्टिंग की हो यह पूरी तरह बेहतर प्रदर्शन के आधार पर ही होता है पुरुष ऑफिसर के साथ कड़ी प्रतियोगिता के बीच महिला ऑफिसर अपनी योग्यता के दम पर ग्रुप कैप्टन भी बनी है सेना में महिला पुरुष नहीं बल्कि सिर्फ एक ऑफिसर होते हैं जिसका काम देश की सरहदों की रक्षा करना होता है चाहे ग्राउंड ड्यूटी में हो या फिर आसमान में प्लेन उड़ना हो।6

भारतीय नौसेना में महिलाएं 1992 से अधिकारी के रूप में कार्यरत है, जिसमें केवल तीन रास्ते ही महिलाओं के लिए उपलब्ध थे। कानून शिक्षा व रसद, लेकिन समय के साथ अब कई रास्ते मौजूद है। वर्ष 1992 में महिलाओं को पहली बार युद्धपोत पर तैनात किया गया था लेकिन बाद में संभसंभारि जैसे मुद्दों को लेकर उसे खत्म कर दिया गया था वर्ष 2021 में भारतीय नौ सेना में 23 वर्षों के बाद महिला अधिकारियों को युद्ध पोतों पर तैनात किया गया जिसमें कुमुदनी त्यागी और रिती सिंह को यह गौरव मिला और दोनों महिलाओं को हेलीकॉप्टर स्ट्रीम में बतौर ऑब्जर्वर के तौर पर चयन हुआ इन्हे आई एन एस विक्रमादित्य, आई0एन0एस0 शक्ति पर तैनाती मिली उसके बाद नेवी के फ्रंटलाइन जंगी जहाजों में महिलाओं की तैनाती हो सकेगी। सब लेटिनेंट को कुमुदिनी त्यागी और रिती सिंह देश की पहली महिला एयरवोट टेक्नीशियन बन चुकी है भारत ने पहली बार समुद्री सीमा की सुरक्षा में इतिहास भी रचा है भारतीय नौसेना की दो पायलट समेत पांच महिला ऑफिसर ने ड्रोनियर एयरक्राट से अरब सागर की निगरानी का एक मिशन पूरा किया इस दौरान कई पुरुष कोई पुरुष साथी मौजूद नहीं था गुजरात के पोरबंदर स्थित आईं एन एस 314 नेवल स्क्वाड्रन से जिन 5 महिला अधिकारियों ने उत्तरी अरब सागर में मैरिटाइम रिकोसेंस एयरक्राट एंड सर्विसलांस मिशन पूरा किया आई एन एस 314 भारतीय नौसेना का फ्रंट लाइट नेवल एयर स्क्वाड्रन हैं। जहां ड्रोनियर 228 मेरीटाइम रिनिकोंसेस एअरक्राट ऑपरेट किए जाते हैं, जो अरब सागर समुद्री सीमा की निगहबानी करते हैं। सशस्त्र बलों में परिवर्तन लाने में भारतीय नौ सेना सबसे आगे हैं। यह प्रभावी और अग्रणी महिला सशक्तिकरण पहल हैं।[7]

भारत सरकार की ओर से दी गई जानकारी के अनुसार, वर्तमान समय में तीनों सेनाओं में लगभग 9,000 से भी ज्यादे महिलाएं कार्यरत हैं, हालांकि सरकार प्राथमिकता के आधार पर सेनाओं में उनकी भूमिका को बढ़ाने के लिए कई तरह के प्रयास

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

कर रही है। भारतीय सेना में सबसे ज्यादा महिलाएं नेवी में कार्य कर रही हैं। नेवी में लगभग 600 महिला ऑफिसर्स सहित महिलाओं की संख्या 6.5 प्रतिशत है, वही 600 महिला भारतीय वायुसेना में इनकी संख्या लगभग 1607 है। इसके अलावा, मिलिट्री मेडिकल स्ट्रीम में करीब 1670 महिला डॉक्टर्स, 190 डेंटिस्ट्स और 4,750 नर्सेज हैं। बीते 6 वर्षों में भारतीय सेना में महिलाओं की संख्या तीन गुना बढ़ गई है। साल 2019 के आंकड़ों को देखें, तो विश्व की दूसरी सबसे बड़ी थल सेना में महिलाओं की संख्या केवल 3.8 प्रतिशत है, जबकि वायु सेना में इनकी संख्या 13 प्रतिशत और नौसेना में 6 प्रतिशत है। अन्य देशों की सेनाओं में महिलाओं की स्थिति की अगर हम बात करे, तो नेशनल काउंसिल फॉर सोशल स्टडीज के अनुसार वर्ष 2015 में विश्व के अलग–अलग देशों में सेना में महिलाओं की संख्या लगभग 53,000 थी। हालांकि यह दुनिया के कुल सेना की क्षमता का पांच प्रतिशत था। इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्ट्रेटेजिक स्टडीज के अनुसार भारत के पड़ोसी देश पाकिस्तान की सेना में 3,400 महिलाएं हैं। ये महिलाएं भी मेडिकल या डेस्क जॉब करती हैं। वही ग्लोबल सिक्योरिटी की एक रिपोर्ट के अनुसार अमेरिकी सेना में लगभग 16 प्रतिशत महिलाएं हैं जिनकी संख्या करीब 74,000 है। वहीं रूस में 10% महिलाएं सेना में शामिल हैं। इस्राइल की सैन्य शक्ति में पुरुषों और महिलाओं की संख्या लगभग बराबर है। इस्राइल की महिला सैनिकों को दुनिया में सबसे खतरनाक माना जाता है। चीन की सेना में ढाई लाख के लगभग महिला सैनिक हैं, जिनमें डेढ़ लाख आर्म्ड फोर्सेज का हिस्सा हैं, फ्रांस में महिलाएं वर्ष 1800 से ही सेना में कार्यरत हैं हैं। यूक्रेन, चेक गणराज्य, पोलैंड, ब्रिटेन, पाकिस्तान, यूनान, आस्ट्रेलिया और रोमानिया में सेना में महिलाएं लड़ाकू और प्रशासनिक दोनों तरह की भूमिकाएं निभा रही हैं। इनमें से कुछ देशों की महिलाएं जासूसी का काम करती हैं। अनेक अण्डर कवर एजैंट हैं। महिलाएं हर वह किरदार निभा रही हैं, जो पुरुष निभाते आए हैं भारतीय पैरामिलिट्री फोर्सेज में महिलाओं की संख्या लगभग सीआरपीएफ मे 5928, सीआईएसएफ मे 5896, बीएसएफ में 2640, एसएसबी में 1166 और आईटीबीपी में 1091 है।[8]

निष्कर्ष– भारतीय इतिहास और संस्कृति में महिलाओं की भूमिका अत्यंत गौरवशाली रही है। भारत ही एक देश है जहां महिलाओं के नाम के साथ देवी शब्द का प्रयोग किया जाता है। यहां नारी को शक्ति स्वरूपा, भारतीय संस्कृति की संवाहक, जीवन मूल्यों की रक्षक, त्याग, दया, क्षमा, प्रेम, वीरता और बलिदान के प्रतीक के रूप में स्थापित किया गया है और नारी को गृहलक्ष्मी की मान्यता दी गई, परंतु कालांतर में इन धारणाओं में परिवर्तन परिलक्षित होने लगे और समाज में स्त्री की स्थिति कमजोर हो गई। वह अशिक्षा, लैंगिक भेदभाव, कुप्रथाओं और पुरुषवादी सोच का शिकार रहकर घर की दहलीज तक सीमित होकर रह गई थीं, लेकिन अब स्थितियां बदल रही हैं, इक्कीसवीं सदी में भौतिकवादी परिवेश और बाजारवादी ताकतों के दबाव में नारी की छवि में तेजी से बदलाव हुआ। इक्कीसवीं सदी में जितनी बड़ी संख्या में महिलाएं शिक्षक, इंजीनियर, डॉक्टर और वैज्ञानिक बनकर उच्च पदों पर पहुंचीं और रोजगार के विविध आयामों में पूरी सक्रियता के साथ अपनी भूमिका निभा रही हैं, महिलाओं ने आइटी, प्रशासन, शिक्षा और विज्ञान जैसे अनेक क्षेत्रों में महिलाओं ने अपनी भागीदारी बढ़ाकर एक अमूल्य पहचान बनाई है और सरकार के सेना में महिलाओं को परमानेंट कमीशन दिए जाने के इस फैसले ने निश्चित रूप से भारतीय सैन्य बलों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ेगी और महिला सशक्तीकरण की अवधारणा को समाज में स्थापित करने में मदद मिलेगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. चौधरी, संघमित्रा (2016)," वूमेन एंड कॉन्लिक्ट इन इण्डिया", न्यूयॉर्क 10017.
2. ब्रिगेडियर चौधरी, भुवनेश (2021)," भारत निर्माण में नारियों का योगदान" प्रभात प्रकाशन।
3. https://www.abplive.com/news/women-will-also-run-cannon-in-indian-army-indian- army-to-in duct-women-in-artillery-abpp-2305194.
4. https://zeenews.india.com/hindi/zee-hindustan/national/indian-airforce-day- special-women-in-armed-force-a-real-story/762254.
5. https://newsonair.com/hindi/2022/10/08/battle-field-to-sky/.
6. https://www.amarujala.com/shakti/indian-air-force-day-2022-meet-kargil-war- female-pilot-warrior-gunjan-saxena-and-srividya-rajan.
7. https://www.jagran.com/editorial/apnibaat-the-participation-of-women-in-the- army-the-perception-of-being-immoral-in-society-will-break-now-jagran-special- 20623018.html.
8. https://blogs.navbharattimes.indiatimes.com/nbteditpage/women-becoming-new- power-of-indian-navy/

*****